विद्या भारती संकुल संवाद

विद्या भारती की अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति बैठक जालंधर में सम्पन्न

सामाजिक चेतना का केंद्र बनें विद्या भारती के विद्यालय: गोबिंद महंत जी

विद्यालयों का इंफ्रास्ट्रक्चर अच्छा हो, आचार्यों का टेक्निकल अप-ग्रेडेशन हो: रामकृष्ण राव जी

विद्या भारती की अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति की बैठक, 179 प्रतिनिधि रहे शामिल

व्यास विद्या पीठोम केरल में ओणम उत्सव

केरल | केरल में ओणम एक वार्षिक मलयाली फसल उत्सव है। यह राज्य का आधिकारिक त्योहार है जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों का एक स्पेक्ट्रम शामिल है। हिंदू परंपरा से प्रभावित ओणम राजा महाबली और वामन की याद दिलाता है।

प्रबंध समिति कार्यकर्ता सम्मेलन

राजस्थान | विद्या भारती जयपुर प्रान्त का प्रांतीय प्रबंध समिति कार्यकर्ता सम्मेलन का आगाज भारत माता के पूजन से श्री बलराम आदर्श विद्या मंदिर बस्सी में प्रारंभ। 18 से 20 सितम्बर तक आयोजित किया गया, जिसमे राज्य के 12 जिलों से लगभग 300 प्रबुद्धजन सहभागी बनें।

विद्या भारती की अखिल भारतीय कार्यकारिणी समिति बैठक जालंधर में सम्पन्न

जालंधर। विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 15 से 17 सितम्बर तक विद्या धाम जालंधर में किया गया। उद्घाटन भाषण में विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री गोबिंद महंत जी ने कहा कि विद्या भारती का विद्यालय आदर्श विद्यालय बने और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाते हुए सामाजिक चेतना के केंद्र के रूप में विकसित हो, इसके लिए हम सभी को प्रयास करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में विद्या भारती की भूमिका महत्वपूर्ण है और विगत दो वर्षों से हम इस कार्य के लिए प्रयासरत हैं।

अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य काशीपति जी ने भौगोलिक कार्य विस्तार की चर्चा करते हुए सीमावर्ती, तटवर्ती, संवेदनशील, सेवा क्षेत्र, पोषकवार्ड व ग्राम में कार्य विस्तार कैसे हो, इस पर मार्गदर्शन किया। विद्या भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष डी. रामकृष्णरावजी ने कहा कि विद्यालयों का इंफ्रास्ट्रक्चर अच्छा हो और आचार्यों काटेक्निकल अप-ग्रेडेशन हो, इसके लिए हम प्रयास करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन करते हुए अपना विद्यालय समाज में नेतृत्वकर्ता के रूप में खड़ा हो, इस पर हम सभी को कार्य करना है।

अखिल भारतीय बैठक में संबंधित विषयों का वृत्तकथन और चार पुस्तकों का विमोचन हुआ। इनमें क्रांतिपथ के राही जनजातीय वीर, आचार्य ब्रह्मगुप्त, ज्ञान की बात भाग 2, आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय पुस्तक शामिल है। बैठक के दूसरे दिन पंजाब की लोककला पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए

वर्ष 2035 तक शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन का लक्ष्य रखें- अवनीश जी

और शिशुवाटिका प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। बैठक में देशभर से 179 पदाधिकारी शामिल रहे। प्रान्तों और क्षेत्रों के संख्यात्मक वृत्त पर चर्चा करते हुए विद्या भारती के महामंत्री अवनीश भटनागर जी ने कहा कि कोरोना पूर्व व पश्चात् छात्र संख्या की स्थिति में परिवर्तन आया है। उन्होंने भारतीय भाषा समिति भारत सरकार से प्राप्त प्रस्तावों की जानकारी देते हुए कहा कि अंग्रेजी भाषा के मोहजाल से निकलकर भारतीय भाषाओं को उनका गौरव प्रदान करना एवं उनका संरक्षण व संवर्धन करना हम सभी का दायित्व है। ब्रिटिश राज में भारत की शिक्षा व्यवस्था को समाप्त करने वाले मैकॉले की सिफारिशों को वर्ष 2035 में 200 वर्ष पूर्ण होंगे, तब तक इस अभारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करना हमारा लक्ष्य होना चाहिये।

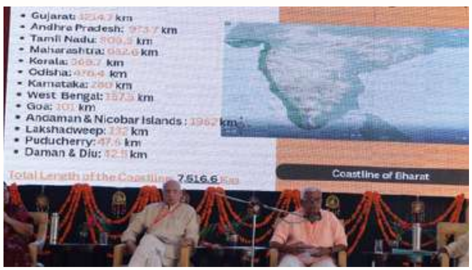

वैचारिक लेख

भगिनी निवेदिता
" जिनके रगों में दौड़ती थी भारत-भक्ति की लहरें "
28 अक्टूबर, जयन्ती पर विशेष - प्रियंवदा मधुकर पांडे

स्वामी विवेकानन्द ने भगिनी निवेदिता से कहा था कि "भविष्य की भारत-संतानों के लिए तुम एकाधार में जननी, सेविका और सखी बन जाओ।" अपने गुरुदेव के इस निर्देश का उन्होंने अक्षरशः पालन किया था। भारत की लज्जा और गर्व निवेदिता की व्यक्तिगत लज्जा और गर्व बन गये थे। किसी भी विदेशिनी महिला ने भारत के धर्म, संस्कृति, दु:ख और स्वप्न को निवेदिता की तरह अपना समझकर ग्रहण नहीं किया था। किसी भी विदेशिनी ने भारत के जनसाधारण के प्राणों की आशा-आकांक्षाओं, भारत की अन्तरात्मा के सत्यस्वरूप को इतनी सूक्ष्मता से समझा न था।

दरअसल, भारत के प्रति उनका आत्मनिवेदन इतना आन्तरिक, सर्वांगीण और परिपूर्ण था कि उनको विदेशिनी कहना ही मानो उनका अपमान करना था। उन्होंने कभी 'भारत की आवश्यकता', 'भारतीय नारी' जैसे शब्दों का उच्चारण नहीं किया, वे कहतीं 'हमारी आवश्यकता', 'हमारी नारी'। भारतवर्ष की बात उठते ही वे भाव-विभोर हो जाया करती। जपमाला लेकर वे भावस्थ हो जप करती 'भारतवर्ष, भारतवर्ष, भारतवर्ष ! माँ, माँ, माँ !'

भारत के प्रति भगिनी निवेदिता की सेवा का स्मरण करते ही हृदय में भारत भक्ति की विद्युत तरंग दौड़ जाती है। हमारे हृदय में भारत भक्ति की प्रेरणा जगाने वाली भगिनी निवेदिता को शत-शत नमन।

"वास्तव में निवेदिता जगतजननी थीं - लोकमाता थी । हमने शायद ही कभी इतने मातृस्नेह के दर्शन किये होंगे जो अपने परिवार क्षेत्र के बाहर एक सम्पूर्ण देश को आत्मसात कर सकता हो, जिनके मध्य से वे काम करती थीं उनके हित के लिए वह त्याग कर सकती थी यही कारण है कि वे नर में नारायण के दर्शन कर सकीं। - रविन्द्रनाथ ठाकुर

विश्वविजयी देशभक्त संन्यासी स्वामी विवेकानंद ने 1897 ई. में कहा था, "आने वाले पचास वर्षों तक हमें केवल एक ही बात का ध्यान रखना चाहिए और वह है अपनी मातृभूमि। भारत माता ही एकमेव जागृत दैवत् हैं।" भगिनी निवेदिता ने स्वामीजी के इसी संदेश को अपना जीवितकार्य बनाया और जीवन के अंतिम श्वास तक उसे निभाया। 28 अक्टूबर 1867 के दिन आर्यलैंड में जन्मी मार्गरिट एलिजाबेथ नोबल बचपन से ही सरल, भक्तिवान और स्वातंत्र्यप्रेमी थीं। राष्ट्रप्रेम और नि:स्वार्थ वृत्ति उसे विरासत में मिली थी। मार्गरिट के दादा-दादी आर्यलैंड के स्वतंत्रता संग्राम में सहभागी थे। धर्मगुरु का कार्य करने वाले पिता सैम्युअल के सेवा-भाव और गृहस्थी का पूरा भार उठाने वाली माता मेरी की श्रद्धा का मार्गरिट पर गहरा प्रभाव था।

श्रद्धापूर्वक परिश्रम से अध्ययन करते हुये वे स्वयं शिक्षिका बनीं और शिक्षा क्षेत्र में नये-नये प्रयोग भी किये। अपने विद्यार्थियों से उनका व्यवहार अत्यंत सौहार्द्रपूर्ण था। शिक्षा के साथ-साथ वे अपने विद्यार्थियों में सेवा-भाव भी जागृत करती थीं। पिता के अचानक देहान्त होने के पश्चात उन्होंने परिवार का दायित्व भी सँभाला। उन्हें ईसाई मत के साथ-साथ बौद्ध मत का भी अच्छा ज्ञान था। भगवान बुद्ध के आदर्श वचनों से वे अत्यंत प्रभावित हुई थीं। हिन्दू धर्म का अभ्यास करने की भी उनकी इच्छा थी और सत्य को पाने के लिये वे अत्यधिक उत्सुक थीं।

ई.स. 1895 में जब स्वामी विवेकानंद लंदन गये तब मार्गरिट को उनके प्रथम दर्शन हुए। स्वामीजी के व्याख्यानों से उनकी अनेक शंकाओं का समाधान हुआ। स्वामीजी के शब्दों का जो परिणाम उपस्थितों पर हुआ उस विषय में भगिनी निवेदिता ने बताया, "पानी के लिये व्याकूल लोग जैसे नदी का प्रवाह पाकर तृप्त होते हैं वैसे ही यूरोप के लोग स्वामी जी के विचार पा कर तृप्त हो गये।" स्वामीजी के लंदन के निवास में उन्होंने उनके सारे व्याख्यान सुने। उनके विचारों पर चिंतन मनन के पश्चात उनसे अपने प्रश्न भी पूछे। उनके साथ वाद-विवाद भी हुये। धीरे-धीरे साधना मार्ग उनके सामने स्पष्ट होने लगा। स्वामी जी के असामान्य नेतृत्व गुण, समाज के प्रति अत्यधिक प्रेम, नि:स्वार्थ और तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मार्गरिट ने स्वामी जी का शिष्यत्व स्वीकार लिया। 28 जनवरी 1898 के दिन मार्गरिट एलिजाबेथ नोबल भारत आयीं। थोड़े ही समय में उन्होंने अपने स्नेह और भक्ति से सब को अपना बना लिया। 25 मार्च के शुभ दिन उनकी ब्रह्मचर्य दीक्षा हुयी। उनके गुरु स्वामी विवेकानंद से उन्हें निवेदिता यह नाम प्राप्त हुआ।

भगिनी निवेदिता ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत माता के प्रति समर्पित कर यह नाम सार्थक किया। भारत भूमि के प्रति उनका अपनत्व इतना आंतरिक था कि सम्भाषण में भारत का उल्लेख वे 'यह देश' और इंग्लैड का उल्लेख 'वह देश' इस प्रकार से करतीं। ठाकुर श्रीरामकृष्ण परमहंस की सहधर्मचारिणी शारदा देवी के शुभाशीर्वाद से भगिनी निवेदिता ने बालिका विद्यालय का आरंभ किया। उन दिनों बालिकाओं को विद्यालय में आने के लिये प्रेरित करने हेतु भगिनी घर-घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क करतीं। उनको शिक्षा का महत्व समझातीं। भारत की

संस्कृति, संस्कार तथा मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा का महत्व विशद करतीं। विद्यालय में भगिनी लेखन-पठन के साथ-साथ चित्रकला, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, मिट्टी की वस्तुयें बनाना तथा अन्यान्य हस्त-व्यवसाय भी सिखातीं। बालिकाओं के मन में राष्ट्रभक्ति जागृत करतीं। 'वन्देमातरम' गाने पर बंदी होने पर भी विद्यालय में 'वन्देमातरम' गाने की परम्परा उन्होंने कायम रखी।

एक बार उन्होंने विद्यालय की बालिकाओं से पूछा, "भारत की महारानी कौन हैं?" तो जवाब मिला - 'रानी विक्टोरिया।' इस उत्तर से वे अत्यंत क्रोधित हो गई। उन्होंने बालिकाओं को समझाया कि भारत की महारानी तो माता सीता ही है। सीता और सावित्री ही भारतीय नारी की आदर्श होनी चाहिए। भारत में आधुनिक काल से स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भगिनी निवेदिता का महत्वपूर्ण योगदान है। जब कलकत्ता में प्लेग का संकट आया तब वे प्लेग पीड़ित लोगों की सेवा में जुट गईं। युवकों को भी सेवा करने के लिये प्रेरित किया। जब भगिनी निवेदिता झाड़ू लेकर रास्ते साफ करतीं तो कलकत्ता के युवक भी उनके साथ काम में जुट जाते। जहाँ डॉक्टर भी जाने के लिये डरते वहाँ भगिनी जाकर रोगियों की शुश्रुषा करतीं। मृत्युग्रस्त परिवारों को सांत्वना देतीं। कार्य की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु उन्होंने अपने केवल दूध व फल के अत्यंत अल्पाहार से दूध कम कर दिया और सेवाकार्य करती रहीं।

निवेदिता काली माता की भक्त बन गयीं। वे उत्कृष्ट वक्ता थीं। काली-दि मदर, माय मास्टर एज आय सॉ हिम, दि वेब ऑफ इंडियन लाइफ, स्टडीज फ्रॉम एन ईस्टर्न होम, अग्रेसिव हिन्दुइसम इत्यादि अनेक पुस्तकें भी उन्होंने लिखीं। लोगों में आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति जगाई। कला के क्षेत्र में भी उनका अभ्यास था। रवींद्रनाथ ठाकुर, अवनींद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस जैसे व्यक्तित्व उनके विचारों से प्रभावित थे।

अग्रेसिव हिन्दुइसम इत्यादि अनेक पुस्तकें भी उन्होंने लिखीं। लोगों में आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति जगाई। कला के क्षेत्र में भी उनका अभ्यास था। रवींद्रनाथ ठाकुर, अवनींद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस जैसे व्यक्तित्व उनके विचारों से प्रभावित थे। दक्षिण के महाकवि सुब्रमण्यम् भारती के काव्य में उन्होंने स्त्री सम्मान और राष्ट्रभक्ति भर दी। डॉ. जगदीशचंद्र बसु ने विज्ञान के क्षेत्र में जो कार्य किया उसमें भी भगिनी निवेदिता का योगदान है। केवल भारत जैसे गुलाम देश के नागरिक होने के कारण डॉ. बसु का जो विरोध इंग्लैड के बुद्धिवादी कहलाने वाले विज्ञान-जगत में हो रहा था उससे भगिनी निवेदिता क्रोधित और दु:खी थीं। डॉ. बसु को विश्व के विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने में भी उनका सहभाग रहा है। उनकी वाणी में, लेखनी में, चिंतन में भारत भक्ति छा गई थी। वे पूर्णत: भारतीय हो गयी थीं। वे पूर्णत: भारतीय हो गयी थीं। वे अपना नाम 'रामकृष्ण -विवेकानंद की निवेदिता' इस प्रकार से लिखती थीं। इससे उनकी गुरुभक्ति का प्रमाण मिलता है।

दार्जिलिंग में स्थित उनकी समाधि पर लिखा है – जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत को अर्पण किया वह भगिनी निवेदिता यहां चिरनिद्रा में लीन है। जन्म से आयरिश, शिक्षा से इंग्लिश परन्तु मन, बुद्धि और कर्म से पूर्णत: भारतीय! भारत माता के प्रति पूर्णतरूप से समर्पित भगिनी निवेदिता से प्रेरणा ले हम भी भारत माँ के प्रति अपने मन, बुद्धि और कर्म से समर्पित होंगे तो वह उनको उनके जन्म दिन पर सही अर्थ में श्रद्धांजलि होगी।

(लेखिका विवेकानन्द केंद्र में जीवनव्रती कार्यकर्ता है।)

33वें क्षेत्रीय खेलकूद समारोह का देश भर में आयोजन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की ओर से आयोजित 33वें क्षेत्रीय खेलकूद प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रांतीय प्रतियोगिता में विजयी खिलाड़ियों ने भाग लेकर पदक प्राप्त किए।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर पारम्परिक खेलों का आयोजन

मेजर ध्यानचन्द जी के जन्मदिन 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर हरीनगर में पारंपरिक खेलों चिड़िया उड़, पोशम्पा भई पोशम्पा, संख्या खेल, चोर सिपाही, लंगडी कूदना, टायर भगाना, रस्सा कस्सी, लटटू चलाना, कबड्डी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि के रूप में सौरभ जी कॉमन वेल्थ गेम्स गोल्ड मेडलिस्ट (शॉट पुट), एशियन गेम्स गोल्ड मेडलिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट जूनियर एशिया, सेफ गेम्स सिल्वर मेडलिस्ट साहिब सिंह जी, खेलो इण्डिया यूनिवर्सिटी गेम्स के गोल्ड मेडलिस्ट, विद्यालय की पूर्व छात्रा मुस्कान राणा दिल्ली स्टेट चैम्पियनशिप (2019-20) 100मी, सी बी एस ई नेशनल मेडलिस्ट (100 मी) आदि उपस्थित रहे।

विद्या भारती से संबद्ध हिंदू शिक्षा समिति की ओर से हेडगेवार सभागार, शंकर नगर में मल्लखंभ,100, 200, 400 मीटर एवं रिले दौड़, कबड्डी, लंबी जंप, ऊंची कूद, गोला फेंक, चक्का फेंक, योग आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें हिन्दू शिक्षा समिति के पाँचों विद्यालयों के लगभग 450 बच्चों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता व ऑल इंडिया बॉक्सिंग कोच एस.आर. सिंह जी, क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अधिकारी व राष्ट्रीय PARA PLAYER राकेश गोस्वामी जी एवं छत्रसाल स्टेडियम के प्रमुख कोच रोशन जी और पूर्वी विभाग के विभाग कार्यवाह सतीश मित्तल जी आदि उपस्थिति रहे।सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज रामपुर में रस्सा खींच, लगोरी, भैया भैया कितना पानी, कोड़ा है जमालशाही आदि का आयोजित किया गया।

समूह गान स्पर्धा संपन्न

विद्या भारती अकोला महानगर द्वारा आयोजित समूह गान स्पर्धा स्थानिक खंडेलवाल भवन में 27 अगस्त को संपन्न हुई। इस अवसर पर अकोला अर्बन कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष रामेश्वर जी फुंडकर एवं विद्या भारती के महाराष्ट्र व गोवा के शिशु वाटिका संयोजक भाई उपाले एवं प्रांत संगठन मंत्री शैलेश जोशी आदि उपस्थिति रहे।

कन्या शिविर का आयोजन

कुरुक्षेत्र। कौशल विकास के लिए एक दिवसीय कन्या शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन बालिका शिक्षा प्रमुख निधि शर्मा ने किया। शिविर में छात्राओं को वस्त्र तह कार्य, साज-सज्जा, पौधों को पानी देना और देखरेख करना, बटन लगाना, कपड़ों पर इस्त्री करना, फल काटना आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान की अखिल भारतीय कार्यशाला का आयोजन

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान की संलग्न संस्थानों की अखिल भारतीय कार्यशाला 26-27 सितम्बर 2022 को डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ में आयोजित की गई।

शिक्षा का दर्शन और राष्ट्र का दर्शन एक होना चाहिए। हमने शिक्षा को यज्ञ माना है। यज्ञ स्वयं के लिए नहीं दूसरों के लिए होता है। ज्ञान यज्ञ का अर्थ है दूसरों को ज्ञान देना। शिक्षकों का दायित्व है कि प्राचीन ज्ञान का अध्ययन करें। शिक्षा में भारतीयता का तत्व आना चाहिए। उपरोक्त विचार इस कार्यशाला में डॉ. कृष्ण गोपाल, सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने व्यक्त किए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद शर्मा ने कहा कि विद्या भारती ने जिन उद्देश्यों के लोई कार्य किया है, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिलक्षित होता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो.डी. पी. सिंह ने बताया कि पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त कर अच्छे व्यक्तित्व के धनी वैश्विक नागरिक का निर्माण करना हमारा उद्देश्य है। इस कार्यशाला में 42 संस्थानों के 107 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

**विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
द्वारा 26-27 सितम्बर 2022
को
डॉ शकुंतला मिश्रा
राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय
लखनऊ में आयोजित
"संलग्न संस्थानों की अखिल
भारतीय कार्यशाला"
की कुछ स्मृतियां।**

अखिल भारतीय संस्कृत-शिक्षक प्रशिक्षण पंचदिवसीय आवासीय कार्यशाला - 2022

संस्कृत से ही एक भारत, श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना संभवः श्रीराम अरावकर जी

भाव की दृष्टि से नित्य नवीन है संस्कृतः चंद्र किरण जी

पंजाबी बाग, नई दिल्ली | श्रीराम अरावकर" जी ने संस्कृत की उपयोगिता बताते हुए कहा कि संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जो प्राचीनता के साथ अर्वाचीन को सम्बद्ध कर सकती है, इसके माध्यम से एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना संभव है।

श्रीमान् उपेंद्र कुमार शास्त्री जी ने भाषा कौशलों को विकसित करने के लिए संस्कृत क्रीडा का अभ्यास कराया तथा आधुनिक युग में संस्कृत भाषा के लिए तकनीकी की आवश्यकता होती है इसके लिए प्रयोग में आने वाली टङ्कण विधि तथा उपयोगी एप्स का प्रशिक्षण प्रदान किया।

श्रीमान् चाँदकिरण सलूजा जी ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत सर्वप्रथम जो वाक्य हैं वह शिक्षा नीति को प्रभावित करता है। बालक का संपूर्ण विकास तभी संभव है, जब पंचकोशीय शिक्षा प्रणाली से छात्रों को अधिगम कराया जाए। संस्कृत काल की दृष्टि से प्राचीनतम हो सकती है, किंतु भाव की दृष्टि से नित्य नवीन है। शिक्षा प्रणाली के चार आधार स्तंभ हैं- ज्ञान हेतु शिक्षा, कार्य हेतु शिक्षा, मिलकर कार्य/रहने की शिक्षा, मनुष्य बनने की शिक्षा। उन्होंने बताया कि क्रिया के बिना ज्ञान भार ही रहता है अतः निरंतर क्रियाशील व्यक्ति ही लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है। संस्कृत भाषा प्राचीन है तो यह हमारा गौरव है संस्कृत भाषा नवीन उपलब्धि करा रही है, इसमें हमारा सम्मान है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का चतुर्थ अध्याय शिक्षण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अध्याय हैं, जिसका निरंतर चिंतन करें क्योंकि शिक्षा प्राणदान प्रक्रिया है।

डॉ. मनमोहन शर्मा ने "गतिविध्यात्मकं शिक्षणम् अधिगमनञ्च" विषय पर पीपीटी के माध्यम से विषय को स्पष्ट किया तथा गतिविधि द्वारा शिक्षण कितना सहज और सरल हो जाता है इसका क्रियात्मक रूप प्रस्तुत किया।

डॉ. पारुल ने विद्यालयगत होने वाली समस्याओं तथा भाषागत समस्याओं को क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा निदान करने की बात कही, क्योंकि क्रियात्मक अनुसंधान समस्याओं का तत्काल निदान करता है और यह क्रियात्मक अनुसंधान कम समय में, कम धन व्यय में तथा विद्यालय में जो संसाधन है उन्हीं संसाधनों के माध्यम से शीघ्र प्रभाव देता है। इसके द्वारा कठिन से कठिन समस्या का तत्काल निदान हो जाता है और यह संवादात्मक सत्र बहुत ही प्रभाव पूर्ण रहा।

डॉ. प्रेम पनेरु जी ने "संस्कृतमय परिवेश" का व्यावहारिक पक्ष प्रस्तावित किया उन्होंने कहा कि हम विभिन्न प्रकार के सामाजिक व शैक्षिक परिवेश में रहते हुए संस्कृत में वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं; क्योंकि हमारी मातृभाषा के अंतर्गत 50 से 60 प्रतिशत शब्द संस्कृत शब्द होते हैं, अतः संस्कृत के शब्दों का संग्रहण व वाचन सहज रूप से संभव है। विद्यालय में विविध प्रकार की गतिविधियों, संस्कृत सप्ताह आयोजन तथा छात्रों के मध्य सूचना संप्रेषण में संस्कृत वाक्यों का प्रयोग करें तो निश्चित रूप से संस्कृत में वातावरण संभव है।

कार्यशाला में विशेष आकर्षण के केंद्र बिंदु -
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को किस तरह अपने अध्यापन के साथ संबद्ध कर सकते हैं, इस प्रक्रिया का विधिवत् ज्ञान। शिक्षण के साथ-साथ विविध उपकरणों का निर्माण। भाषा शिक्षण के साथ क्रीडा-विधि।

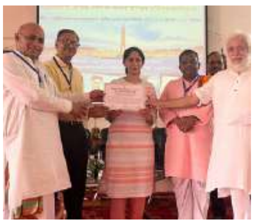

इस प्रशिक्षण कार्यशाला में माननीय गोविंद चंद्र महंत (संगठन मंत्री, विद्या भारती), श्रीराम अरावकर (अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, विद्या भारती), श्रीमान् उपेंद्र कुमार शास्त्री (अखिल भारतीय संस्कृत संयोजक), श्रीमान् रवि कुमार (संगठन मंत्री, विद्या भारती, दिल्ली), पद्मश्री चमूकृष्ण शास्त्री (प्रतिष्ठित संस्कृत शिक्षाविद्), श्रीमान् चाँदकिरण सलूजा (निदेशक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान), श्रीमान् दिनेश कामत (संगठन मंत्री, संस्कृत भारती), श्रीमान् किशनवीर सिंह (अखिल भारतीय संस्कृत प्रभारी), श्रीमान् लक्ष्मी नरसिंह (अध्यक्ष, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान), डॉ. मनमोहन शर्मा (प्रशिक्षक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान), डॉ. प्रेम पनेरु (प्रशिक्षक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान), श्रीमान् हर्ष कुमार (विद्या भारती उत्तर क्षेत्र प्रशिक्षण प्रमुख) आदि का सान्निध्य सत्रानुसार प्राप्त हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में 11 क्षेत्रों के सभी प्रांतों से 130 क्षेत्र प्रमुखों/प्रांत प्रमुखों/आचार्यों ने प्रतिभागिता ग्रहण की।

विद्या भारती के विद्यालयों में मनाया गया "हिन्दी दिवस"

विद्यालयों में छात्रों के द्वारा 14 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस का कार्यक्रम मनाया गया

कार्यक्रमों में विद्यालय के छात्रों ने विभिन गतिविधियों में भाग लिया। कार्यक्रमों में छात्रों ने कविता, भाषण, प्रश्न मंच, श्रुत लेख, सुलेख में भाग लिया तथा छात्रों को हिंदी भाषा के महत्व के बारे में भी जानकारी दी गई ।
14 सितंबर 1949 को संविधान के अनुसार सत्र में अध्याय के अनुच्छेद 343(1) में हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला, इसलिए 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है सभी को हिंदी भाषा को अपनाकर हिंदी भाषा का सम्मान करना चाहिए । विद्यालय के वरिष्ठ आचार्यों ने इस जानकारी के साथ ही छात्रों को हिंदी भाषा को अपनाने का संकल्प भी दिलाया ।

विद्या भारती के विद्यालयों में मनाया गया "संस्कृत सप्ताह"

विद्यालयों में छात्रों के द्वारा संस्कृत सप्ताह आयोजन को सफल बनाने हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, इन कार्यक्रमों में संस्कृत - संवाद, संस्कृत गीत गायन, संस्कृत नाटक, संस्कृत भाषण, श्लोक गायन, संस्कृत वस्तु प्रदर्शनी, संस्कृत गीत एवं नाटक प्रमुख रहे ।

समस्त विद्यालयों में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया एवं सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में संस्कृत भाषा के प्रति जागृति उत्पन्न की गई।

पूर्व छात्र परिषद कुरुक्षेत्र द्वारा गौ वंश सेवा

पूर्व छात्र परिषद कुरुक्षेत्र द्वारा गौ वंश सेवा को बचाने लिए अभियान शुरू किया

लंपी मुक्त अभियान के तहत अभी तक 150 बेसहारा गायों को रोग प्रतिरोधक दवाई दी जा चुकी है ।

हरिभूमि

रोहतक - कुरुक्षेत्र

3 Sep 2022

पशुओं को बचाने के लिए आगे आए विद्या भारती के पूर्व छात्र

हरिभूमि न्यूज ▸▸ कुरुक्षेत्र

लंपी मुक्त अभियान में विद्या भारती के पूर्व छात्र जी-जान से जुटे हुए हैं। अभियान की शुरुआत 28 अगस्त से की गई थी। अभी तक 150 बेसहारा गायों को रोग प्रतिरोधक दवाई दी जा चुकी है।

अभियान आगे भी जारी है। कार्यक्रम के संयोजक पूर्व छात्र अशोक रोशा ने बताया कि प्रतिदिन पांच टीमें इस कार्य को मूर्त रूप देने के लिए सुबह 5 बजे लग जाती है। आटा गूंदना, आयुर्वेदिक दवा का ...

■ अभी तक 150 बेसहारा गायों को रोग प्रतिरोधक दवाई दी जा चुकी : अशोक

करोना काल में पूर्व छात्रों ने तन मन धन से सहयोग किया था, वैसा ही समाज सेवा करने का उत्साह पूर्व छात्रों में बना हुआ है। उत्तरक्षेत्र के सह-संगठन मंत्री बालकृष्ण ने कहा कि गायमाता में लंपी वायरस के रोग से ग्रस्त हैं, पर मुझे गौरव है की विद्या भारती के पूर्व छात्र विद्यालय से प्राप्त संस्कारों की बदौलत देश और समाज में संकट की घड़ी में हमेशा अग्रसर होकर कार्यरत रहते हैं। इस अवसर पर पंकज शर्मा, अशोक रोशा, कुलदीप चोपड़ा, रणधीर, निखिल, राजीव शर्मा, मनोज,

विद्या भारती प्रांत स्तरीय गणित-विज्ञान मेला प्रतियोगता

गणित-विज्ञान मेले में विज्ञान मॉडल और गणित, कम्प्यूटर, संस्कृत और संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रश्न मंच प्रतियोगिता करवाई गई। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया भी गया।

विद्या भारती की उपलब्धियां

शैक्षिक

सिविल न्यायधीश के लिए चयन

राजस्थान | गीता विद्या मंदिर, गोहाना राजस्थान की पूर्व छात्रा (2015) शिवानी पुत्री श्री श्यामलाल बंसल का पहले प्रयास में सिविल न्यायधीश के लिए चयन। शिवानी ने 12वीं की परीक्षा साइंस स्ट्रीम से उत्तीर्ण की और बाद में बीए, एलएलबी, एलएलएम किया।

खेलकूद

निशि ने जेवलिन थ्रो मे दिलाया स्वर्ण पदक

बिहार | ईस्ट जोन प्रतियोगिता में तिलौथू की निशि ने जेवलिन थ्रो मे दिलाया स्वर्ण पदक। इससे पूर्व भी निशि ने बिहार की तरफ से जेवलिन थ्रो प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व करते हुए रजत पदक और कांस्य पदक प्राप्त किया है ।

छात्र स्वास्तिक ने राष्ट्रीय स्तर पर किया अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭ कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र। छात्र स्वास्तिक को बधाई देते प्राचार्य नारायण सिंह व अन्य।

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय के कक्षा 9वीं के छात्र स्वास्तिक चौहान ने भारत से चयनित कुल 560 विद्यार्थियों में स्थान बनाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। स्वास्तिक ने रोड रिपेयरिंग से संबंधित रोबोट तैयार किया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सहारा लेकर यह रोबोट गड्ढों को खोजने तथा उनकी रिपेयर करने का कार्य करता है। सभी ने स्वास्तिक द्वारा प्रदर्शित इस रोबोट की प्रशंसा की। ध्यातव्य है कि इंस्पायर मानक अवार्ड का संचालन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के सौजन्य से छात्रों में विज्ञान एवं तकनीकी गुणों को भरने हेतु प्रतिवर्ष किया जाता है। इस वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन विज्ञान भवन दिल्ली में 14 से 16 सितम्बर तक किया गया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंध समिति एवं प्राचार्य नारायण सिंह ने स्वास्तिक को बधाई दी तथा उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ दी।

प्रांतीय योगासन, बैडमिंटन प्रतियोगिता के लिए सरस्वती शिशु मंदिर गंडई के भैया बहिनों का चयन

गंडई पंडरिया(दावा)। सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के निर्देशानुसार छत्तीसगढ़ प्रांत का विभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 15 सितंबर से 17 सितंबर तक सरस्वती शिशु मंदिर लिए चयनित हुए हैं। जिसमें योगासन प्रतियोगिता में भैया सौरभ वर्मा, चेवेन्द्र साहू, उभय नेताम, टिकेश रोडगे, दुष्यंत साहू, बहिनों में निशा देवांगन, लुसिका देवांगन, अनामिका मिश्रा, गरिमा नामदेव, आंशु देवांगन, गितेश देवांगन, ईशांत साहू, तेजेश सेन का चयन हुआ है, जिसकी प्रतियोगित 8 व 9 अक्टूबर को सरस्वती विहार रायपुर में होगा। चयनित प्रतिभागी भैया बहनों को

नये तकनीकों से छात्रों को सीखने का अवसर देता है अटल टिंकरिंग लैब: अरविंद सिंह

स्वतंत्र चेतना, बस्ती। सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबाग में अटल टिंकरिंग लैब में नीति आयोग की ओर से विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण हुआ। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाचार्य अरविंद सिंह ने कहा कि प्रशिक्षण के माध्यम से बुनियादी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को बेहतर ढंग से समझने के लिए यह माडयूल काफी उपयोगी होगा। पाठ्यक्रम छात्रों को न केवल यह समझने में मदद करेगा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकी कैसे काम करती है, बल्कि उन्हें यह भी महसूस कराती है कि उनके पास मशीनों को पढ़ने की सारगर्भित है। जैसे ही विद्यार्थी चेहरे का मौका प्रदान करेगा। शिक्षा व्यवस्था के पहले पायदान से ही उन्हें प्रोफेशनल और पर्सनल स्किल्स को साधने का उपयुक्त मौका देता है। केंद्र की मोदी सिस्टम तैयार किया जा सकता है, जो मानव बुद्धिमता यानी इंटेलिजेंस के बराबर होगा। इस तकनीक के माध्यम से अल्गोरिदम सीखने, पहचानने,

समाचार पत्रों में विद्या भारती

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-65

ई-मेल: vbabss@yahoo.com, vbsamvad@gmail.com

वेबसाइट: www.vidyabharti.net

फेसबुक | ट्विटर | इंस्टाग्राम : vidyabharatiIN

Youtube: Vidya Bharati Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan

फोन: 91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126